PUNE RESEARCH WORLD ISSN 2455-359X
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF INTERDISCIPLINARY STUDIES VOL 3, ISSUE 3

कमलेश्वर की कहानियों में कथ्य-वैविध्य

डॉ. भरत पटेल
हिन्दी विभाग
विजयनगर आर्ट्स कॉलेज जि. साबरकांठा
गुजरात भारत

कमलेश्वर 'नई कहानी' के प्रमुख रचनाकारों में से एक हैं | 'राजा निरबंसिया', 'कस्बे का आदमी', 'खोई हुई दिशाएँ', 'मांस का दरिया', 'जिंदा मुर्दे' 'बयान', 'इतने अच्छे दिन', 'मेरी प्रिय कहानियाँ' आदि उनके कहानी-संग्रह हैं | कहानीकार के रूप में उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे आम आदमी की साधारण ज़िंदगी से जुड़े रहने में प्रवृत्त रहते हैं | यही कारण है कि उनकी कहानियों में सामान्य जन के दु:ख-दर्द, आशा-निराशा, अभाव, संघर्ष, मजबूरी तथा समाज-जीवन की विसंगतियों के अनेकानेक चित्र उभरते चलते हैं | कमलेश्वर जी के व्यापक जीवनानुभव एवं गहरी मानवीय संवेदनाओं से जुड़े होने के कारण उनकी कहानियों में कथ्यगत नावीन्य और वैविध्य देखने को मिलता है | श्री रामदरश मिश्र कमलेश्वर की कहानियों के संदर्भ में लिखते हैं - "कमलेश्वर ने अपने लेखन के प्रारंभ से ही सामान्य मनुष्य के दु:ख-दर्द को, उसकी आकांक्षाओं को, उसके अभाव और संघर्ष को, उसकी मजबूरी और आदमीयत को पकड़ने का प्रयत्न किया है और अपने इस प्रयत्न में वे सपाट नहीं होते क्योंकि वे परिस्थितियों का ब्यौरा नहीं पेश करते बल्कि बाहर-भीतर की परिस्थितियों और मन:स्थितियों के गहरे तनाव पर नजर रखते हैं ... आम जिंदगी से जुड़ी होने के नाते कमलेश्वर की कहानियों में वैविध्य है इसीलिए उनकी हर नयी कहानी पढ़ने की इच्छा होती है | " [१]

'राजा निरबंसिया' कहानी के कारण कमलेश्वर को हिन्दी कथा-साहित्य जगत में कहानीकार के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त हुई | नवीनतम शैली और प्रभावशाली भाषा के कारण यह कहानी सशकत और मार्मिक बन पड़ी है | इस कहानी में दो कहानियाँ समानान्तर चलती है | एक ऐतिहासिक कहानी

है, जिसमें राजा और रानी की कहानी है | दूसरी आधुनिक युग के भारतीय समाज की वास्तविक कहानी है |

जगपति और कथावाचक दोनों गाँव में रहते थे, साथ-साथ पढ़ते थे | कथावाचक मैट्रिक पासकर स्कूल में नौकरी करने लगा और जगपति कस्बे में एक वकील के यहाँ मुहर्रिर हो गया | इसी साल पास के गाँव में चंदा नामक लड़की से उसकी शादी हो गई | चार वर्ष के दाम्पत्य-जीवन के बाद भी संतान न हुई और माँ पोते को खिलाने का अरमान लिए ही ऊपर चली गई | एक दिन जगपति को दूर के रिश्ते के भाई दयाराम की शादी में जाना पड़ा | दस दिन में लौट आने का कहकर गया था | दयाराम की शादी हो गई, दूसरे मेहमान चले गए | कल जगपति को भी जाना था, लेकिन उसी रात डाका पड़ा । डाकुओं ने गोलियाँ चलाई | जगपति और दयाराम ने लाठियाँ उठा ली | घर में कुहराम मच गया | जगपति को जांघ में दो गोलियाँ लग गई | उसे वहाँ के नजदीक के कस्बे के अस्पताल में भर्ती कर दिया | रोती-कलपती चंदा वहाँ पहुँच गई | कंपाउंडर बचनसिंह ही मरीजों की देखभाल करता था | उसका मन जवान चंदा के प्रति आसक्त हो जाता है | जगपति को जल्द ठीक होने के लिए शहर से अपने पैसों की दवाइयाँ लानी पड़ गई | चंदा अपने सोने का कडा कंपाउंडर को देने गई | वहाँ रात का अंधेरा था | चंदा न चाहते हुए भी अपना शरीर उसे दे बैठी और उसने कडा चंदा को पहना दिया | अच्छे इलाज और महँगी दवाइयों से कुछ दिनों में जगपति ठीक होकर घर लौट गया और बचनसिंह का तबादला हो गया |

काफी दिनों के बाद घर पहुँचा तो पड़ोसिन चाची ने किसी से ऊँची आवाज में कहा - राजा निरबंसिया अस्पताल से लौट आया | गाँव के लोग इस निसंतान दंपति पर ताने कसते रहते थे | जगपति की नौकरी छुट गई थी | एक रात वह चंदा के दोनों कड़ों को देखकर अचंभित हो जाता है | उसके मन में तरह-तरह के विचार आने लगते हैं , पर कुछ कह नहीं पाता | काम की टोह में कई दिन मारा-मारा फिरता रहा | उसे विचार आता है कि चंदा से कड़े माँगकर उसके पैसों से कोई धंधा शुरू कर दे | एक दिन पता पूछता हुआ बचनसिंह उसके घर आ धमकता है | चंदा को उसका आना अच्छा न लगा हो इस तरह वह जगपति से कहती है -'जाने कैसे-कैसे आदमी होते हैं ... इतनी छोटी जान-पहचान में तुम, मरदों के घर में न रहते घुसकर बैठ सकते हो ? तुम तो उल्टे पैर लौट आओगे |' [२] इतना कहकर वह जगपति की प्रतिक्रिया देखने के लिए गहरी निगाहों से उसे ताकने लगी | जगपति कहता है - 'बचनसिंह अपनी तरह का आदमी है, अपनी तरह का अकेला ... आड़े वक्त काम आनेवाला आदमी है , लेकिन उससे फायदा उठा सकना जितना आसान है ... उतना | मेरा मतलब है कि ... जिससे कुछ लिया जाएगा, उसे दिया भी तो जाएगा |' [३] फिर तो बचनसिंह

का आना-जाना शुरू हो गया | उसके रुपयों से जगपति की लकड़ी की टाल खुल गई | धंधा अच्छा चलने लगा, उसका ज्यादा समय टाल पर ही बीतने लगा | चंदा गर्भवती हो जाती है | लोग ताने सुनाते हैं कि इसके पेट में तो कंपाउंडर का पाप है | जगपति भी ये बातें सुनता है, पर दिल पर पत्थर रखकर खामोश रहता है | एक दिन चंदा मायके जाने की बात करती है | जगपति बेमन जाने को कहता है | चंदा फफक कर रो पड़ती है | जगपति के क्रोध का ज्वालामुखी फूट पड़ता है -

'यह सब मुझे क्या दिखा रही है ? बेशर्म ! बेगैरत ! ... उस वक्त नहीं सोचा था, जब ... जब ... मेरी लाश तले ...'

'तब ... तब की बात झूठ है ...', सिसकियों के बीच चंदा स्वर फूटा, 'लेकिन जब तुमने मुझे बेच दिया ...' [४] चंदा के गाल पर जोरदार तमाचा मारकर जगपति कोठरी में अपने आप को बंद कर लेता है | दूसरे दिन चंदा अपने मायके चली जाती है |

कुछ समय बाद जगपति को समाचार मिलत है कि चंदा को लड़का हुआ है और वह दूसरे के घर बैठने जा रही है | यह बात सुनकर उसके मन में उधेडबुन चलती रहती - 'उसके जीते जी वह दूसरे के घर बैठने जा रही है ... वह जरूर औरत थी, पर स्वयं मैंने उसे नरक में डाल दिया ! वह बच्चा मेरा कोई नहीं, पर चंदा तो मेरी है | एक बार उसे ले आता फिर यहाँ ...' [५] उसी रात जगपति अपना सारा कारोबार त्याग अफीम और तेल पीकर मर जाता है, क्योंकि चंदा के पास कोई दैवी-शक्ति नहीं थी और न जगपति राजा था, वह बचनसिंह कंपाउंडर का कर्जदार था | उसने दो चिट्ठियाँ छोड़ रखी थी | एक चंदा के नाम, जिसमें लिखा था - 'चंदा मेरी अंतिम चाह यही है कि तुम बच्चे को लेकर चली आना ... चंदा आदमी को पाप नहीं पश्चाताप मारता है, मैं बहुत पहले मर चुका था | बच्चे को लेकर जरूर चली आना |' दूसरी चिट्ठी कानून के नाम लिखी थी, जिसमें यह लिखा था कि मुझे किसी ने नहीं मारा | मुझे कर्ज के जहर ने मारा है | मेरी लाश तब तक न जलायी जाय जब तक चंदा बच्चे को लेकर न आ जाए | आग बच्चे से दिलवाई जाय | बस |

इस कहानी में गरीब नि:संतान दंपति की व्यथा-कथा, समाज की क्रूर मानसिकता, सहायता के बहाने शोषण, पैसों के अभाव के कारण पति-पत्नी के बनते-बिगड़ते रिश्तों, मनुष्य की स्वार्थपरता, नैतिकता का अध:पतन, यौनाचार, लोक-निंदा, पश्चाताप और आत्म-हत्या जैसी स्थितियों को लेखक ने बड़ी संजीदगी के साथ प्रस्तुत किया है |

कमलेश्वर रचित 'मांस का दरिया' वेश्या-जीवन को लेकर लिखी गई बहुचर्चित कहानी है | इसमें वेश्या-जीवन की इस वास्तविकता को दिखाया गया है कि जब तक उसका शरीर चुस्त-दुरुस्त है, तब

तक उसकी आमदनी चलती है ; परन्तु ढलती उम्र हो या कोई बीमारी हो तब पूछनेवाला कोई नहीं होता | जुगनू नामक वेश्या जब बीमार होती है तो परिचित ग्राहकों से रुपये उधर लेकर इलाज करवाती है | कुछ ठीक होकर लौटती है तो पुलिसवाले सात महीनों के बकाया हफ्तों के लिए परेशान करते हैं | तबीयत ठीक न होने पर भी वह ग्राहकों के साथ सो कर उधारी वसूल करवाती है | जांघ पर फोड़ा निकल आने पर उसकी स्थिति बड़ी दयनीय हो जाती है - 'जुगनू शाम को पुल्टिस हटा देती थी और बड़े बेमन से सिंगार करके बैठ जाती थी | फोड़ा गांठ बनकर रह गया था, दर्द बहुत करता था | फिर भी वह जैसे-तैसे एकाध को खुश कर ही देती थी |' [६] यहाँ वेश्याओं की मजबूरी और दर्दनाक यातना को लेखक ने जीवंत कर दिखाया है | जुगनू की कथा के माध्यम से लेखक ने देह-व्यापार में फंसी सैंकड़ों लड़कियों-औरतों की व्यथा को वाणी दी है |

'तलाश' कमलेश्वर की एक ऐसी कहानी है, जो आधुनिक युग की नौकरी-पेशा स्त्रियों के भीतर हो रहे बदलाव, स्त्री-पुरुष सम्बन्ध और पारिवारिक सम्बन्धों के उतार-चढ़ाव को सशक्त रूप से रेखांकित करती है | बीस वर्ष की जवान बेटी सुमी और उनतालीस वर्ष की विधवा माँ दोनों नौकरी करती हैं | सुमी के पापा आठ साल पहले दुनिया छोड़कर चले गए थे | कॉलेज में नौकरी करती माँ इतनी सुंदर है कि बेटी उसके सौंदर्य पर मुग्ध हो जाया करती है | ममी कॉलेज के हिसाब-किताब का काम कभी-कभी घर पर ले आती है और फाइलों के साथ होते हैं मिस्टर चंद्रा | सुमी को माँ के बदलते वर्तन-व्यवहार का एहसास होता रहता है | वह ममी और पापा के साथ वाली अपनी तस्वीर, उनकी फाइलें, डायरी और छड़ी अपने कमरे में ले आती है | माँ अपने अतीत से दूर होकर जीवन की वास्तविकता - आवश्यकता को स्वीकार करने का प्रयास करती है | बाँह पर का नीला निशान, कॉलेज का सामान खरीदने के लिए मिस्टर चंद्रा के साथ माँ का दो दिन बाहर जाना और लौटने पर सूटकेस से पुरुष का ऊनी मोजा आदि को छिपाने की कोशिश को सुमी चुपचाप पकड़ लेती है, पर कहती कुछ नहीं | ये घटनाएँ माँ-बेटी को दो अलग-अलग किनारों पर समानांतर खड़ा कर देती है | आखिर एक दिन सुमी दिल कडा करके ममी से कह देती है - 'ममी यहाँ से मुझे ऑफिस बहुत दूर पड़ता है ... अगर दो-तीन महीने में तुम्हें कॉलेज का काटेज मिल गया, तो ऑफिस और भी दूर हो जाएगा... इस वक्त वर्किंग गर्ल्स हास्टेल में जगह मिल सकती है ... अगर तुम कहो तो मैं वहाँ सीट ले लूँ...? 'वहाँ तुम्हें दिक्कत होगी', ममी के स्वर में प्यार था | 'तो घर भाग आऊँगी', सुमी के लहजे में बहुत अपनापन था |' [७]

पहली तारीख को सुमी होस्टल में पहुँच जाती है | ममी कुछ दिनों तक शाम को आती रही, फिर टेलीफोन पर बातें होती रही | कुछ समय बाद इसमें भी व्यवधान आने लगा | सुमी पापा के साथ बातें कर लेती है | इस कहानी में प्रौढ़ माँ को अपने अतीत से मुक्त होकर नए जीवन की तलाश है

तो बेटी को अपने पहलेवाले घर की तलाश है - जिसमें उसके पापा भी थे | इसमें स्त्री-पुरुष के अवैध सम्बन्धों से उत्पन्न पारिवारिक विघटन की समस्या को लेखक ने बखूबी चित्रित किया है |

'कितने पाकिस्तान' कमलेश्वर की बहुचर्चित कहानी है | देश-विभाजन की विभीषिका निर्दोष मनुष्य की जिंदगी को तहस-नहस कर देती है | हर गाँव, हर शहर हिन्दू-मुसलमानों के बीच दंगे-फसाद होते रहते थे | लोग कटते रहते थे, घर जलते रहते थे, दुकानें लुटती रहती थीं | कथा-नायक के जीवन की तीन घटनाएँ उसके त्रासद जीवन से गहरी संवेदना और मार्मिकता के साथ रूबरू करवाती है - "दोस्त ! इस लंबे सफर के तीन पड़ाव हैं - पहला, जब मुझे बन्नो के मेहंदी के फूलों की हवा लग गई थी ; दूसरा, जब इस चाँदनी रात में मैंने पहली बार बन्नो को नंगा देखा था और तीसरा तब, जब उस कमरे की चौखट पर बन्नो हाथ रखे खड़ी थी और पूछ रही थी 'और है कोई ?' " [८]

मंगल नाम का एक हिन्दू लड़का, एक मुस्लिम लड़की बन्नो (सलीमा) से मिलता है | कुछ ही मुलाकातों में यह बात जाहिर हो जाती है | हिन्दू-मुसलमानों के बीच तनाव फैल जाता है | लड़की का बाप ड्रिल मास्टर सीधा-सादा इन्सान था, पर मौलवी और अन्य मुसलमान विरोध करने, मारने-काटने पर उतारू थे | लड़के के दादा को धमकियाँ दी जाती हैं | अंततः लड़के की शक्ल दूसरे दिन दिखाई नहीं देनी चाहिए - इस शर्त पर समाधान होता है | मंगल को चुनार से बाहर भेज दिया जाता है | इलाहाबाद से होता हुआ वह बम्बई चला जाता है | वहाँ से पूना जाकर नौकरी करने लगता है | कुछ वर्ष बाद उसके दादाजी आठ घर मुसलमान जुलाहों और दो घर हिन्दू बढ़इयों को लेकर भिवंडी आ जाते हैं, क्योंकि वे सूती कपड़े का व्यापार करते थे | एक बार दादाजी मंगल से मिलने पूना आते हैं, तब पता चलता है कि ड्रिल मास्टर का परिवार भी साथ आ गया है और उन्हों ने अपनी बेटी बन्नो की शादी मुनीर से कर दी है जो रेशम के करधे चलाता है |

भिवंडी में एक बार किसी कारण दंगा-फसाद हो जाता है | दंगे-फसाद रुकने पर मंगल अपने परिवार को देखने भिवंडी पहुँचता है | वहाँ पहुँचने पर पता चलता है कि एक ही घर में नीचे ड्रिल मास्टर का परिवार रहता था और ऊपर मंगल का परिवार | परंतु दादाजी कुछ दिन पहले चुनार चले गए थे | मास्टर साहब उसे घर की चाबी देते हैं | वह ऊपर खाट डालकर सोता है | चाँदनी रात में नीचे आँगन में बन्नो लगभग नंगी सोई थी और उसकी अम्मी उसके स्तनों से दूध निकालने में उसकी मदद कर रही थी | दूसरे दिन सुबह पुलिस मंगल को थाने ले जाती है और पूछती है - कहाँ से आये हो ?, क्यों आये हो ? मास्टर साहब थाने आकर उसे छुड़ा लेते हैं | उनसे हुई बातचीत से पता चलता है कि दंगे होने के तीन दिन पहले बन्नो ने बच्चे को जन्म दिया था | डॉ. सारंग के

अस्पताल में भी आग लगा दी गई थी | रास्ता रुँध गया तो जान बचाने के लिए बच्चों को दूसरी मंजिल से नीचे फेंका गया था | नौ बच्चों में से सात बच्चे तो नीचे गिरकर मर गए | बन्नो का बच्चा भी मर गया था | दूध उतरता है तो उसे बहुत तकलीफ होती है | बन्नो को जैसे-तैसे बचाकर घर लाया गया था | घर के सामने फिर मार-काट शुरू हो जाती है | मास्टर साहब के परिवार को बचाते वक्त दादाजी की बायीं बाँह कट जाती है | वे कटी बाँह को हथियार बनाकर लड़े थे | कुछ दिन यहाँ के अस्पताल में मरहम-पट्टी करवाने के बाद वे चुनार चले गए | रात को बन्नो और मुनीर के झगड़े से पता चलता है कि वह अपना खून बेचकर शराब पीने लगा है | मंगल पूना लौट आता है |

चार-पाँच महीनों बाद दादाजी का खत मिलता है | वे फिर भिवंडी आ गए थे | मुनीर बन्नो को लेकर बम्बई चला गया है | ड्रिल मास्टर पागल हो गये हैं | एक दिन मंगल बम्बई आया हुआ था | उसका मित्र कैलाश उसे वोहरा मुसलमान की गली में ले जाता है | एक कमरे में उसे बिठाकर वह एक वेश्या के पास चला जाता है | लौटते वक्त एक कमरे के दरवाजे से स्त्री का हाथ निकलता है और कैलाश को उसका कंघा और चाबियों का गुच्छा लौटाता है | सिंधी दलाल के साथ अन्य युवक (मंगल) को देखकर वह औरत पूछती है - 'और है कोई ?' मंगल पीछे मुड़कर देखता है तो पेटीकोट और ब्लाउज पहने बन्नो खड़ी थी | मंगल सीढ़ियाँ उतर जाता है | वह मन ही मन पूछता है - "पता नहीं यह बदला तुम मुझ से ले रही थी, अपने से, मुनीर से या पाकिस्तान से ? ... अब कौन-सा शहर है जिसे छोड़कर मैं भाग जाऊँ ? कहाँ-कहाँ भागता रहूँ, जहाँ पाकिस्तान न हो ! " [९]

देश-विभाजन के समय पाकिस्तान बनने की घोषणा और उसके बाद हिन्दू-मुसलमानों के बीच हुई कत्लेआम और आगजनी में पूरा देश जलने लगा था | धर्म का जनून और नफरत की आग आज भी रह-रहकर लोगों के दिलों-दिमाग में भड़क उठती है | वर्षों बाद भी आम आदमी की जिंदगी में पाकिस्तान आड़े आता रहता है - "ओफ़ ! मालूम नहीं कितने पाकिस्तान बन गये एक पाकिस्तान बनने के साथ-साथ | कहाँ-कहाँ, कैसे-कैसे ! सब बातें उलझकर रह गई | सुलझा तो कुछ भी नहीं ... पाकिस्तान हमारे बीच बार-बार आ जाता है | यह हमारे या तुम्हारे लिए कोई मुल्क नहीं है, एक दु:खद सच्चाई का नाम है | " [१०] मंगल की यह स्वगतोक्ति कितना कुछ कह जाती है |

'इतने अच्छे दिन' कमलेश्वर की एक ऐसी कहानी है, जिसमें यह दिखाया गया है कि अकाल पड़ने से किसी के दिन कैसे अच्छे हो सकते हैं | तीन साल तक लगातार अकाल पड़ने से आसपास के कई गाँवों में लोग भूख से मरने लगे थे, कुछ घर छोड़कर चले गए थे | इन्सान और पशुओं के मृत-देह जहाँ-तहाँ पड़े हुए थे | कुत्तों और गिद्धों के लिए तो अच्छे दिन आ गए थे |

गाँव में रहनेवाला दलित जाति का युवक बाला इस कहानी का प्रमुख पात्र है | अकाल में भूख के कारण दादा मर गये और आठ दिन बाद दादी | बाप के लाख कहने पर भी बाला ने दादा का अग्नि-संस्कार नहीं होने दिया था, क्योंकि इस विस्तार में कुछ दूरी पर चीनी की मीलें खुल चुकी थी और चीनी को चमकाने के लिए शोरा चाहिए, इसके लिए हड्डियाँ चाहिए | इसलिए पास में ही हड्डियों का गोदाम खुल गया था | बाला हड्डियाँ इकट्ठी कर गोदाम पर बेच आता था | इस संदर्भ में यह संवाद दृश्टव्य है- "बापू ने बहुत कहा था, पर बाला नहीं माना था कि दादा की लाश को जलाया जाए | जलाने से क्या मिलेगा ? बाला बापू पर चीखा था | और बापू चीखा था - अरे कमीने ! तू हड्डियाँ भी बेच खाएगा ? ऐसी औलाद से तो निपूता ही मरता ! " [११] यहाँ इन्सान हैवान बनता नजर आता है | भूख मनुष्य से क्या-क्या नहीं करवाती है - 'बुभुक्षितं किं न करोति पापम् |' उसने दादा की लाश को झुलसी-तपसी धरती के नीचे दफना दिया था और छोटी बहन कमला को पहरे पर लगा दिया था, क्योंकि कोई दूसरा इसे निकाल न ले जाए | वहीं से ट्रक ड्राइवर बंतासिंह कमली को उठा ले गया था | अब वह नजदीक की ट्रक-सराय में ड्राइवरों के संग रात बीताकर रुपये कमा लेती है | कमली का पता लगने पर बाला भी वहीं चला गया था | वह हड्डियों के लिए लड़ाई-झगड़ा भी करता था - "असल में जब तीसरे साल अकाल पड़ा, तब बाला को होश आया था | अपने रिश्तेदारों की हड्डियाँ कितनी कीमती हैं ! अपने रिश्तेदारों के ढ़ोर-डंगरों की हड्डियाँ कितनी कीमती हैं ! हड्डियों के लिए तब महाभारत मचा था | लोग पहरा लगाने लगे थे - ये हमारे रिश्तेदारों की हड्डियाँ हैं ... ये उनके ढ़ोर-डंगर की हड्डियाँ हैं | इन पर हमारा हक है |

तब बाला ने जमकर लड़ाई लड़ी थी | गाँव-गाँव में और आसपास रहते रिश्तेदारों की हड्डियों के लिए वह लड़ता था | ढ़ोर-डंगरों के पिंजरों के लिए उसने लड़ाई की थी | " [१२] चंदु को कमली के साथ घर बसाने की इच्छा थी | वह हड्डी-गोदाम में काम करने लगा था | हड्डी-गोदाम पहले खुल गया होता तो शायद इसका सपना पूरा हो जाता, पर अब तो सबकुछ बदल गया है | बाला सोचता है - "साला बोरा बहुत महकता है, पर दाम तो अच्छे देता है | कमली भी चार-पाँच रुपए बना लेती है | एक-सवा रुपया बोरे भर हड्डियों का मिल जाता है | छ: रुपये रोजाना कौन कमाता है, साला ! " [१३] बाला दादी का अस्थि-पिंजर निकाल लाया है | उस रात कमली बस्ती के लाला के साथ सोयी हुई थी | उसने रात को ही कह दिया था कि लाला से दस रुपया वसूलना | सुबह में वह दादी की हड्डियों के बारे में बताता है तो कमली कहती है - इसे नदी में सिरा आ | बुरे दिन होते तो दूसरी बात थी | गोदाम में दे आता, पर अब नहीं |

बाला दादी से मन ही मन कहता है - "कमली भी समझदार हो गई है, दादी | अपन से उसने बात की थी | कहने लगी - चंदु से कह दे क्या फायदा ? घर बसाऊँगी तो लौट के वहीं गाँव के बाहर झोंपड़ी डालनी होगी | कुआँ सूखेगा तो फिर इधर ही भागना पड़ेगा | तब एक-एक लोटे पानी के लिए ब्राह्मण-ठाकुर छोड़ देंगे क्या ? अकाल तो हम लोगों के लिए पड़ता है ... यहाँ कोई यह तो नहीं पूछता है कौन जात है ? अपनी जरूरत से लोग आते हैं, कल नहीं आएँगे तो इसी सराय के बर्तन-भांडे धोकर चलता रहेगा | ऐसे दिन बार-बार हाथ नहीं आते | " [१४] कमली के इस कथन में वह सच्चाई छिपी हुई है जो सदियों से निम्न-जातियाँ भोगती आ रही है | गाँव में अस्पृश्य बनकर गाँव के बाहर रहना पड़ता और लोटे भर पानी के लिए ब्राह्मण-ठाकुरों की हवस का शिकार बनना पड़ता | इससे तो यहाँ अच्छा है | शरीर देती है तो रुपये भी मिलते हैं | यहाँ भारतीय समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव, पाखण्ड और शोषण की मानसिकता पर कटु व्यंग्य किया गया है |

'दिल्ली में एक मौत' कहानी में लेखक ने यांत्रिक युग के मनुष्य की संवेदनहीनता और आडंबर को यथार्थफरक अभिव्यक्ति दी है | आज मनुष्य की जिंदगी यंत्रवत होती जा रही है | लेखक ने मानवीय सम्बन्धों तथा सामाजिक मूल्यों के विघटन के साथ-साथ मनुष्य की स्वार्थपरता, दम्भ और संवेदनहीनता को उजागर किया है | महानगर के मशहूर सेठ दीवानचंद की मौत हो गई है | उनकी स्मशान-यात्रा का दृश्य कुछ इस प्रकार है - "चार आदमी कंधा दिये हुए हैं और सात आदमी साथ चल रहे हैं | सातवाँ मैं ही हूँ और सोच रहा हूँ कि आदमी के मरते ही कितना फर्क पड़ जाता है | पिछले साल ही दीवानचंद ने अपनी लड़की की शादी की थी तो हजारों की भीड़ थी | कोठी के बाहर कारों की लाइन लगी हुई थी ... " [१५] सेठ शरीफ और दुनियादार आदमी थे | कई लोगों की उन्हों ने मदद की थी | अत: उनकी शव-यात्रा में जाना हर परिचित व्यक्ति का कर्तव्य था | ज़्यादातर स्त्री-पुरुष साड़ी और सूट-बूट में सज-धजकर गाड़ियों में बैठकर स्मशान पहुँचते हैं | फूल और मालाएँ चढ़ाकर सीधे अपने दफ्तर या नौकरी के लिए निकल पड़ते हैं | इस औपचारिक और निर्जीव सामाजिकता पर लेखक ने मार्मिक व्यंग्य किया है |

संदर्भ-संकेत :

१. हिन्दी कहानी : अंतरंग पहचान - रामदरश मिश्र, पृष्ठ - १६१-६२ नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली |
२. कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ - पृष्ठ-१८, नेशनल ट्रस्ट बुक, इंडिया, नई दिल्ली |
३. वही, पृष्ठ- १८

४. वही, पृष्ठ- २४
५. वही, पृष्ठ- २७
६. मांस का दरिया, कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ - पृष्ठ- ८०
७. तलाश, कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ - पृष्ठ- ५५
८. कितने पाकिस्तान , www.hindisamay.com
९. कितने पाकिस्तान , www.hindisamay.com
१०. कितने पाकिस्तान , www.hindisamay.com
११. इतने अच्छे दिन, कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ - पृष्ठ - २२९
१२. वही, पृष्ठ- २२९
१३. वही, पृष्ठ- २२७-२८
१४. वही, पृष्ठ- २३१
१५. दिल्ली में एक मौत, कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ - पृष्ठ - १२२